डी.ए.वी. गान

अविरल निर्मल सलिल सदय,
ज्ञान प्रदायिनी ज्योतिर्मय।
हो चहुँदिशि उद्घोष अभय,
डी.ए.वी. जय-जय।।2

प्रबल प्रवाहमयी नित-नूतन,
जीवनदायिनी सदा सनातन।
वेद प्रणीता,
परम पुनीता,
ये धारा अक्षय।
डी.ए.वी. जय-जय।।
दयानंद से प्रेम भक्ति ले,
हंसराज से त्याग शक्ति ले,
धर्म भक्ति का, राष्ट्र शक्ति का
हो दिनमान उदय।
डी.ए.वी. जय-जय।।
सुख-समृद्धि इसकी लहरें,
प्रेम-शांति इसके तट ठहरें।
सघन शांतिमय,
प्रबल कांतिमय,
लिए अटल निश्चय।
डी.ए.वी. जय-जय।।

अनुक्रम

क्रम संख्या	शीर्षक	पृष्ठ संख्या
1.	प्रार्थना	1
2.	विश्वशांति	2–8
3.	पढ़ेगा इंडिया तो बढ़ेगा इंडिया	9–14
4.	भगवान के साथ एक मुलाकात	15–22
5.	एक सीख	23–31
6.	कहाँ गए वो बच्चे	32–39
7.	मेरी जीवन यात्रा	40–45
8.	एक छोटी–सी मुस्कुराहट	46–54
9.	एक प्रतिक्रिया ऐसी भी	55–63
10.	मन का आईना	64–70
11.	मुझे चाहिए	71–82
12.	ये दिल माँगे मोर	83–89
13.	आओ मिलकर चलें	90–99
❖	आर्यसमाज के नियम	100

1 प्रार्थना

पितु-मातु सहायक स्वामी सखा, तुम ही इक नाथ हमारे हो।
जिनके कछु और अधार नहीं, तिनके तुम ही रखवारे हो।।1।।

सब भाँति सदा सुखदायक हो, दु:ख दुर्गुणनाशनहारे हो।
प्रतिपाल करो सिगरे जग को, अतिशय करुणा उर धारे हो।।2।।

भूलि हैं हम ही तुमको तुम तो, हमरी सुधि नाहि बिसारे हो।
उपकारन कौ कुछ अन्त नहीं, छिन-ही-छिन जो विस्तारे हो।।3।।

महाराज महामहिमा तुम्हरी, समझे बिरले बुधिवारे हो।
शुभ शान्तिनिकेतन प्रेमनिधे! मन-मन्दिर के उजियारे हो।।4।।

इस जीवन के तुम जीवन हो, इन प्राणन के तुम प्यारे हो।
तुम सों प्रभु पाय 'प्रताप हरि', केहिके अब और सहारे हो।।5।।

2 विश्वशांति

अनन्या की जैसे ही नींद खुली उसने नाना-नानी को अपने कमरे में बैठा पाया। उसकी खुशी का ठिकाना न रहा। माँ उसे कई दिनों से बता रहीं थीं कि नाना-नानी उनके घर रहने आने वाले हैं। वह कूदकर नानी के गले जा लगी। नानी ने उसे गले लगाते हुए चुप रहने का इशारा किया।

उसके नाना कुर्सी पर आँखें बंद करके चुपचाप बैठे थे। तभी उन्होंने प्रार्थना शुरू की।

ओ३म् द्यौः शान्तिरन्तरिक्षं शान्तिः
पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः।
वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः
सर्वं शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि।।
ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः।

अनन्या की नानी ने उसे आँखें बंद करके चुपचाप बैठने के लिए कहा तथा वे भी आँखें बंद करके नानाजी के साथ प्रार्थना करने लगीं।

विश्वशांति

जैसे ही नानाजी ने अपनी आँखें खोलीं, अनन्या उनके गले जा लगी। उसने नानाजी को बताया कि उसके स्कूल में भी शांतिपाठ होता है।

नानाजी– अरे वाह बिटिया! तो तुम शांतिपाठ जानती हो।

(तभी अनन्या की माँ ने कमरे में प्रवेश किया। उनके हाथों में ट्रे थी जिसमें चाय और बिस्कुट थे।)

उन्होंने हँसते हुए कहा– "पिताजी, जानती तो है पर इसका अर्थ शायद नहीं समझती क्योंकि हर समय ज़िद करती रहती है। सबसे लड़ती है और क्रोध में रहती है। शांति से इसका कुछ लेना-देना नहीं है।"

(अनन्या की माँ ने ट्रे मेज़ पर रखते हुए सबको बिस्कुट दिए और अनन्या की तरफ़ दूध का गिलास बढ़ाया। अनन्या ने दूध को अपने से दूर करने के लिए ज़ोर से गिलास पर हाथ दे मारा। दूध का गिलास ज़मीन पर गिरते-गिरते बचा।)

विश्वशांति

अनन्या की नानी ने दूध का गिलास अपने हाथ में लेते हुए अनन्या को अपने पास बुलाया और अपनी गोद में बिठाते हुए कहा– "आओ, हम दोनों शांतिपाठ करें।"

ओ३म द्यौः शान्तिरन्तरिक्षं.....

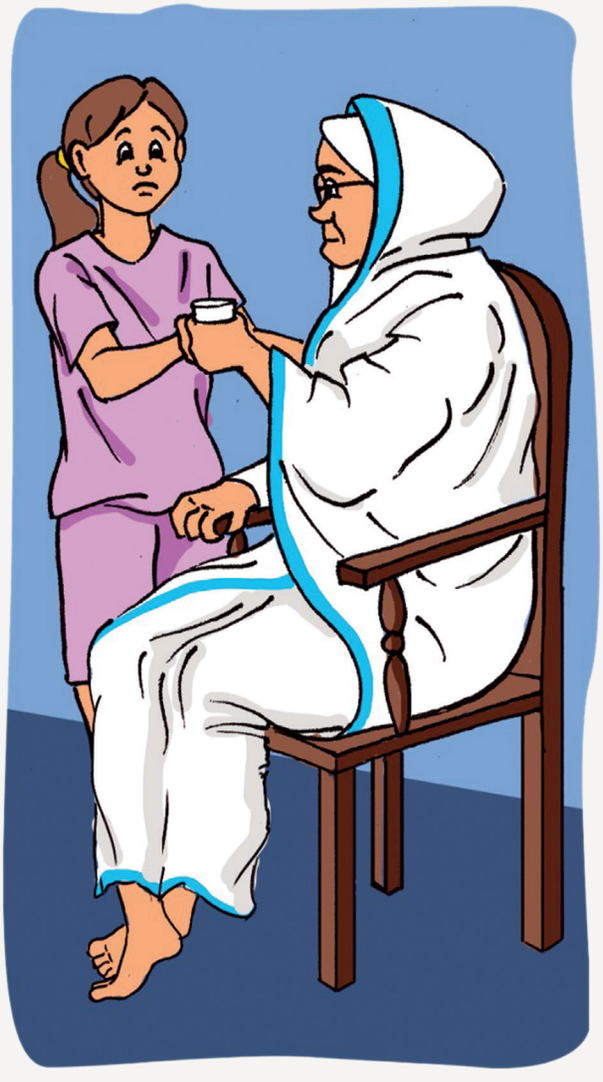

नानी– क्या तुम इसका अर्थ जानती हो?

अनन्या– शायद, पर पूरी तरह नहीं।

नानी– इसका अर्थ है कि सूर्य, अंतरिक्ष हमें शांति प्रदान करें। उन्होंने शांतिपाठ का आगे उच्चारण करते हुए कहा–

"शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः ..."

अर्थात् पृथ्वी पर शांति हो तथा पानी (जल) भी शांति प्रदान करे, सारी जड़ी-बूटियाँ हमें शांति प्रदान करें।

"शान्तिः वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः ....."

विभिन्न वनस्पतियाँ यानि सब पेड़-पौधे शांति प्रदान करें तथा सारे गुरु तथा सभी बुद्धिमान व्यक्ति, उत्तम पदार्थ सबको शांति देने की दिशा में काम करें। ब्रह्म यानि ईश्वर और सारे वेद हमें शांति प्रदान करें।

"सर्वं शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि।....."

इसका अर्थ है कि हम सब शांतिपूर्वक एक-दूसरे के साथ रहें। मैं हमेशा शांत रहूँ और हम सबको ईश्वर शांति का आशीर्वाद दें।

विश्वशांति

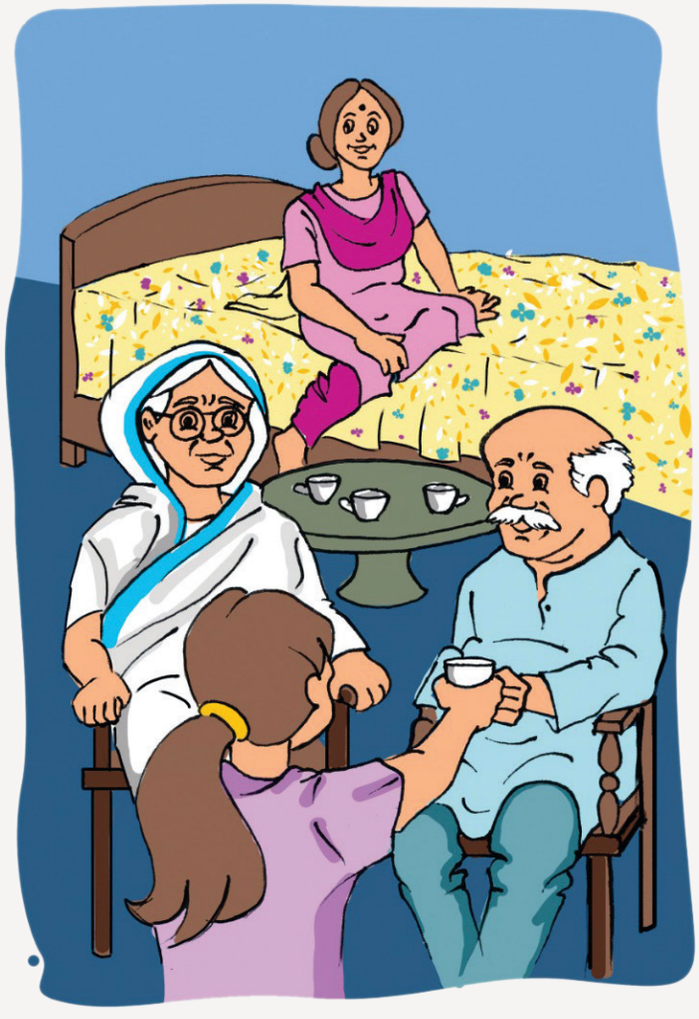

अनन्या अभी तक नानी को बहुत ध्यान से सुन रही थी। उसने नानी से पूछा कि हमें सूर्य, अंतरिक्ष, पानी, पेड़ों से शांति माँगने की क्या ज़रूरत है? हम सीधा भगवान से ही शांति क्यों नहीं माँग लेते?

नानाजी ने चाय का कप मेज़ पर रखते हुए कहा कि अगर वह जल्दी से दूध पी ले तो वे इसका कारण उसे बता सकते हैं। अनन्या ने तुरंत दूध पी लिया और नानाजी को खाली गिलास दिखाते हुए कारण बताने के लिए कहा।

नानाजी- अनन्या, तुम तो जानती ही हो जैसे ईश्वर ने मनुष्य को बनाया है। वैसे ही उसने सूर्य, पृथ्वी, पेड़, पौधे और सब जीव-जंतुओं को भी बनाया है। हम शांति पाठ द्वारा उनसे प्रार्थना करते हैं कि हम उनके द्वारा बनाए हुए सभी जीवों, पेड़-पौधों, जल, पृथ्वी आदि के साथ शांति से रह सकें ताकि संतुलन बना रहे। जब-जब यह संतुलन हिलता है तो बाढ़, अकाल जैसी प्राकृतिक आपदाएँ आती हैं। जिससे काफ़ी जान-माल का नुकसान होता है इसलिए हम ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि पानी, आकाश, पेड़-पौधे आदि सब हमें शांति प्रदान करें। हाँ, ये सच है कि सिर्फ़ शांतिपाठ करने से ही सब कुछ नहीं होगा। हमारे कर्म भी ऐसे होने चाहिए कि हम पेड़-पौधे, जीव-जंतुओं, पानी आदि की रक्षा और संरक्षण के बारे में सोचें तथा इसके लिए कार्य करें।

अनन्या- हाँ नानाजी, हमारे स्कूल में भी जल, वायु, मिट्टी और पेड़ों के संरक्षण के बारे में पढ़ाया जाता है।

नानाजी- हाँ बिटिया रानी, इसलिए पढ़ाते हैं ताकि हम इनके महत्त्व को समझें और शांति से भगवान की बनाई हुई इन संरचनाओं के साथ रह सकें। जानती हो; 'भगवान' शब्द का अर्थ है- भ-भूमि, ग-गगन, व-वायु, अ-अग्नि तथा न-नीर (जल)। कुछ देर चुप रहने के बाद नानाजी हँसते हुए बोले, "और तुम दूध के गिलास को गिरा रही थीं। सोचो तो, गाय ने यह दूध अपने बछड़े को न पिलाकर तुम्हारे लिए भेजा है।"

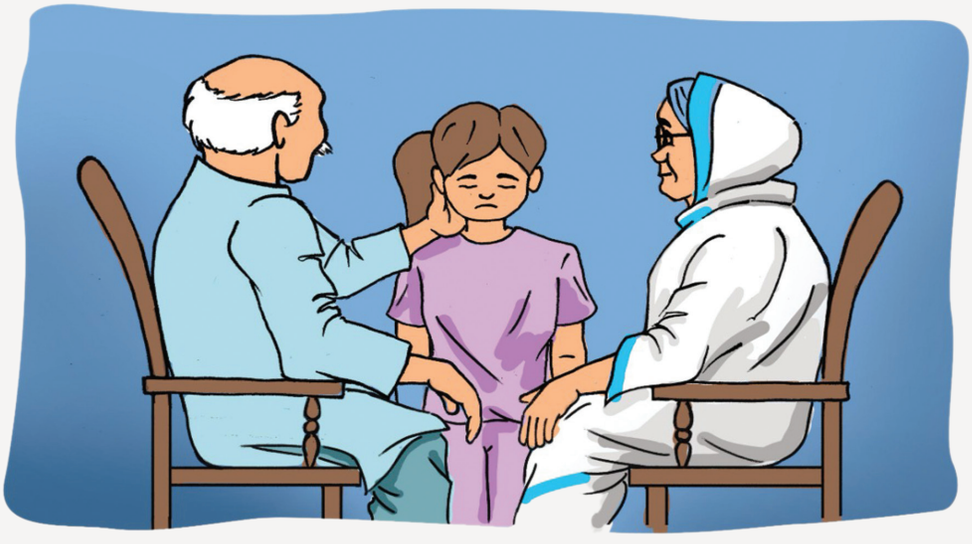

अनन्या- (आँखें नीची करके धीरे से बोली) "मैं समझ गई नानाजी, आगे से बेवजह क्रोध नहीं करूँगी और किसी भी वस्तु का दुरुपयोग भी नहीं करूँगी। मुझे क्षमा कर दीजिए।"

नानाजी ने हँसते हुए कहा- "चलो, फिर से शांतिपाठ करते हैं।" सबने आँखें बंद करके दोबारा एक स्वर में शांतिपाठ किया।

ओ३म् द्यौः शान्तिरन्तरिक्षं शान्तिः
पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः।
वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः
सर्वं शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि।।
ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः।

।। ओ३म् शान्तिः ।।

विश्वशांति

ज़रा सोचिए

प्रश्न 1: अनन्या की माँ ने क्यों कहा कि अनन्या शांतिपाठ जानती तो है परंतु उसका अर्थ नहीं समझती? इस कहानी में से कोई दो ऐसे उदाहरण ढूँढ़कर लिखिए जो उनके इस कथन की पुष्टि करते हैं।

.....

.....

.....

प्रश्न 2: आपके विचार से जो व्यक्ति शांतिपाठ का अर्थ अच्छी तरह से समझता है; उसका आचरण कैसा होना चाहिए?

.....

.....

.....

.....

प्रश्न 3: अनन्या के किस आचरण से आपको लगता है कि वह ज़िद करती है या क्रोधी है? आप उसे क्या सलाह देंगे और क्यों?

.....

.....

.....

.....

प्रश्न 4: हम शांतिपाठ द्वारा ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि हम उसके द्वारा बनाए हुए सभी जीवों, पेड़-पौधों, जल, पृथ्वी आदि के साथ शांति से रह सकें, ताकि संतुलन बना रहे।

आप किन्हीं पाँच ऐसे प्रयासों के बारे में लिखिए, जिनके द्वारा आप इस संतुलन को बनाए रखने में अपना योगदान दे सकते हैं।

(**उदाहरण** - खाने की वस्तुओं को बर्बाद न करना इत्यादि।)

.....

.....

.....

.....

आओ इसे अपने जीवन में उतारें

प्रतिदिन सुबह उठकर शांतिपाठ का तीन बार उच्चारण करें। ऐसा प्रतिदिन नियमित रूप से करें और इसे अपनी जीवनचर्या का हिस्सा बनाएँ।

आओ खोजें

शांतिपाठ का वेदों में उल्लेख हुआ है। इसके बारे में जानकारी एकत्रित कीजिए।